अर्पण

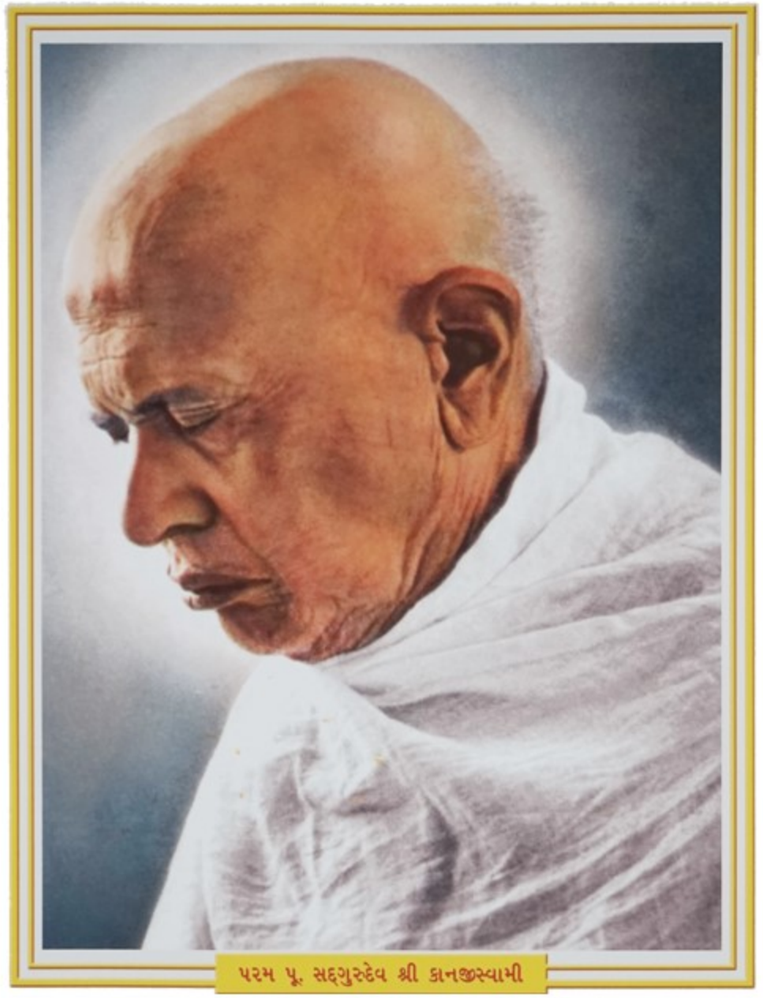

कल्याणमूर्तिश्रीसदगुरुदेवको
जिन्होंने इस पामर पर अपार उपकार किया है। जो स्वयं
मोक्षमार्ग में विचर रहे हैं और अपनी दिव्य श्रुतधारा
द्वारा भरतभूमि के जीवों को सतत्‌रूप से मोक्षमार्ग
दर्शा रहे हैं जिनकी पवित्र वाणी में मोक्षमार्ग के
मूलरूप कल्याणमूर्ति सम्यग्दर्शन का माहात्म्य
निरन्तर बरस रहा है और जिनकी परम कृपा से
यह ग्रन्थ तैयार हुआ है—ऐसे कल्याणमूर्ति
सम्यग्दर्शन का स्वरूप समझानेवाले
कल्याणमूर्ति श्री सद्‌गुरुदेव को यह
ग्रन्थ अत्यन्त भक्तिभाव से
अर्पण करता हूँ.....

– दासानुदास रामजी

विषय-वस्तु

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या	१	१
निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण	२	१
निश्चय सम्यग्दर्शन के भेद	३	१
तत्त्वों के नाम	४	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीत	५	१

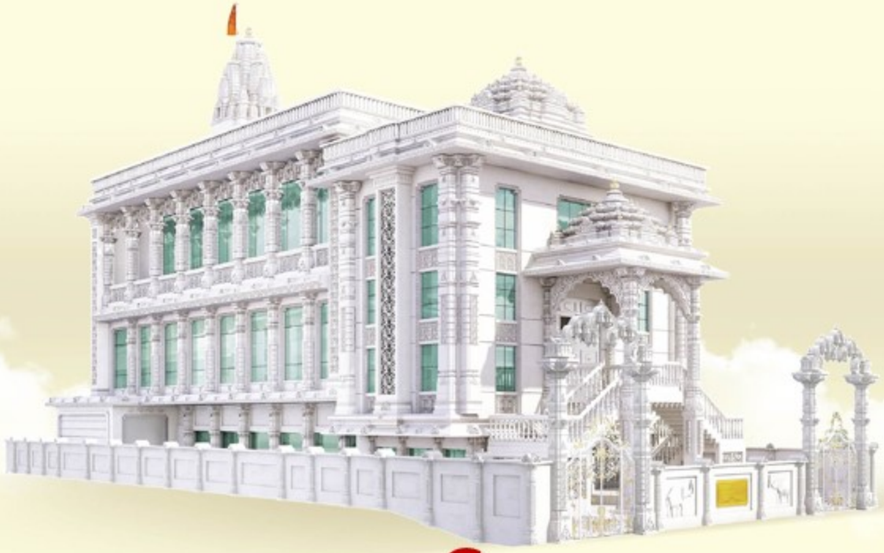

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ५

निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीति

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ॥५॥

अर्थ—[नामस्थापनाद्रव्यभावतः] नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव से [तत् न्यासः] उन सात तत्त्वों तथा सम्यग्दर्शनादि का लोकव्यवहार होता है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - सूत्र का प्रयोजन

- वक्ता के मुख से निकले हुए शब्द की अपेक्षा को लेकर भिन्न-भिन्न अर्थ होते हैं।
- उन अर्थों में व्यभिचार (दोष) न आए और सच्चा अर्थ कैसे हो, यह बताने के लिए यह सूत्र कहा है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - अर्थ के भेद

- तत्त्वार्थ = तत्त्व् + अर्थ = भाव + वस्तु = वस्तु का भाव
- इन अर्थों के सामान्य चार प्रकार किए गए हैं।
- नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव निक्षेप

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - निक्षेप की व्याख्या

- पदार्थों के भेद को न्यास अथवा निक्षेप कहा जाता है।
- प्रमाण और नय के अनुसार प्रचलित हुए लोकव्यवहार को निक्षेप कहते हैं।
- ज्ञेयपदार्थ अखण्ड है, तथापि उसे जानने पर, ज्ञेयपदार्थ के जो भेद (अंश; पहलू) किए जाते हैं, उसे निक्षेप कहते हैं।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ।।५।। - प्रमाण , नय , निक्षेप

- निक्षेप को जाननेवाले ज्ञान को नय कहते हैं।
- निक्षेप, नय का विषय है और नय, निक्षेप का विषयी (विषय करनेवाला) है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ।।५।। - निक्षेप के भेद

निक्षेप के भेद

- नाम
- स्थापना
- द्रव्य
- भाव

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - नामनिक्षेप

- गुण, जाति या क्रिया की अपेक्षा किए बिना, किसी का यथेच्छ नाम रख लेना, सो नामनिक्षेप है।
- जैसे, किसी का नाम 'जिनदत्त' रखा, किन्तु वह जिनदेव के द्वारा दिया हुआ नहीं है तथापि लोकव्यवहार (पहचानने) के लिए उसका 'जिनदत्त' नाम रखा गया है।
- एकमात्र वस्तु की पहिचान के लिए उसकी जो संज्ञा रख ली जाती है, उसे नामनिक्षेप कहते हैं।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - स्थापनानिक्षेप

- किसी अनुपस्थित (अविद्यमान) वस्तु का, किसी दूसरी उपस्थित वस्तु में सम्बन्ध या मनोभावना को जोड़कर आरोप कर देना कि 'यह वही है' सो ऐसी भावना को **स्थापना** कहा जाता है।
- जहाँ ऐसा आरोप होता है, वहाँ जीवों के ऐसी मनोभावना होने लगती है कि 'यह वही' है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - स्थापनानिक्षेप के प्रकार

स्थापनानिक्षेप के प्रकार

- तदाकारस्थापना
- अतदाकारस्थापना

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - सूत्र का प्रयोजन

- जिस पदार्थ का जैसा आकार हो, वैसा आकार उसकी स्थापना में करना, सो 'तदाकारस्थापना' है।
- और चाहे जैसा आकार कर लेना, सो 'अतदाकारस्थापना' है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - स्थापनानिक्षेप का कारण

- सदृशता को स्थापना निक्षेप का कारण नहीं मान लेना चाहिए, उसका कारण तो केवल मनोभावना ही है।
- जनसमुदाय की यह मानसिक भावना जहाँ होती है, वहाँ स्थापनानिक्षेप समझना चाहिए।
- जैसे, वीतराग प्रतिमा को देखकर, बहुत से जीवों के भगवान और उनकी वीतरागता की मनोभावना होती है; इसलिए वह स्थापना निक्षेप है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - अन्तर

नामनिक्षेप और स्थापनानिक्षेप में यह अन्तर है कि नामनिक्षेप में पूज्य-अपूज्य का व्यवहार नहीं होता और स्थापना निक्षेप में यह व्यवहार होता है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - द्रव्यनिक्षेप

- भूत और भविष्यत् पर्याय की मुख्यता को लेकर, उसे वर्तमान में कहना-जानना, सो द्रव्यनिक्षेप है।
- जैसे, श्रेणिक राजा, भविष्य में तीर्थङ्कर होंगे, उन्हें वर्तमान में तीर्थङ्कर कहना-जानना।
- और भूतकाल में हो गए भगवान महावीरादि तीर्थङ्करों को, वर्तमान तीर्थङ्कर मानकर स्तुति करना, सो द्रव्यनिक्षेप है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - भावनिक्षेप

- केवल वर्तमान पर्याय की मुख्यता से जो पदार्थ वर्तमान जिस दशा में है, उसे उस रूप कहना-जानना सो भावनिक्षेप है।
- जैसे, सीमन्धर भगवान वर्तमान तीर्थङ्कर के रूप में महाविदेह में विराजमान हैं, उन्हें तीर्थङ्कर कहना-जानना।
- और भगवान महावीर वर्तमान में सिद्ध हैं, उन्हें सिद्ध कहना-जानना सो भावनिक्षेप है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - दृष्टांत

- जहाँ 'सम्यग्दर्शनादि' या 'जीवाजीवादि' शब्दों का प्रयोग किया गया हो, वहाँ कौन सा निक्षेप लागू होता है, सो निश्चय करके जीव को सच्चा अर्थ समझ लेना चाहिए।

- सूत्र १ में 'सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि' तथा 'मोक्षमार्गः', यह शब्द तथा सूत्र २ में सम्यग्दर्शन, यह शब्द भावनिक्षेप से कहा - ऐसा समझना चाहिए।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - सूत्र का सिद्धान्त

- भगवान के नामनिक्षेप और स्थापनानिक्षेप, शुभभाव के निमित्त हैं; इसलिए व्यवहार हैं।
- द्रव्यनिक्षेप निश्चयपूर्वक व्यवहार होने से, अपनी शुद्धपर्याय थोड़े समय के पश्चात् प्रगट होगी, यह सूचित करता है।
- भावनिक्षेप निश्चयपूर्वक अपनी शुद्धपर्याय होने से धर्म है, ऐसा समझना चाहिए।
- निश्चय और व्यवहारनय का स्पष्टीकरण, इसके बाद के सूत्र की टीका में किया है।

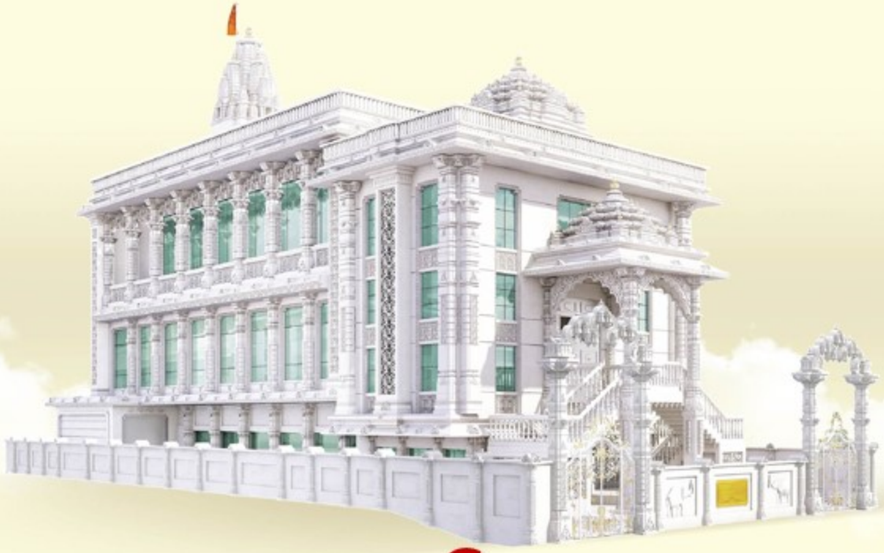

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ५

सहर्ष आभार

मोक्षशास्त्र की पाठशाला के प्रेरणास्तोत्र एवं सहयोगी

- वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु, पू॰ गुरुदेवश्री आदि ज्ञानी धर्मात्मा
- आदरणीय समस्त सहयोगी विद्वानगण
- श्री सीमन्धरस्वामी दि॰ जिनमंदिर, विले पार्ला के समस्त ट्रस्टीगण एवं मुमुक्षुगण
- श्री दि॰ जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, सोनगढ़
- श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
- www.vitragvani.com
- www.atmadharma.com
- भारतीय ज्ञान पीठ